5.

मार्शल और आंशिक सन्तुलन का सिद्धान्त
(Marshall and the Theory of Partial Equilibrium)

अल्फ्रेड मार्शल द्वारा लिखी गई पुस्तक *अर्थशास्त्र के सिद्धान्त* (1890) अर्थशास्त्र पर अब तक लिखी गई सर्वाधिक प्रभावशाली पुस्तकों में से एक है। इस पाठ्यपुस्तक में मार्शल द्वारा विकसित आंशिक सन्तुलनों की विधि आज तक सर्वव्यापी है तथा अर्थशास्त्र के चिन्तन को माँग एवं आपूर्ति के विज्ञान के रूप में निरूपित करती है। लेकिन इसके विपरीत, मार्शल को इस एक विचार तक सीमित नहीं किया जा सकता। उन्होंने लिखा कि “अर्थशास्त्री का मक्का आर्थिक गतिकी (economic dynamics) के बजाय आर्थिक जैविकी (economic biology) में निहित है।” इस मामले में “गतिकी” किसी दृष्टिकोण को विकासवादी की तुलना में अधिक यांत्रिक (न्यूटन के खगोल विज्ञान के अर्थ में) दर्शाती है। अगर मार्शल के अर्थशास्त्र का “विकासवादी” पहलू यहाँ विस्तृत चर्चा में नहीं आता है तो इसका कारण मुख्य धारा के अर्थशास्त्र द्वारा यांत्रिक दृष्टिकोण को सर्वाधिक महत्त्व देना है न कि जैविक दृष्टिकोण को।

आंशिक सन्तुलन विश्लेषण के सम्बन्ध में मार्शल की सफलता के कई कारण हैं जिनमें आपूर्ति-और-माँग सिद्धान्त को पढ़ाने में आसानी शामिल है। मार्शल का कहना था कि गणित की सहायता से जो कुछ भी समझाया जा सकता है वह शब्दों (आरेखों की सहायता से) में भी अभिव्यक्त होना चाहिए अन्यथा वह उपयोगी नहीं है; उनका यही नजरिया उनके काम में प्रवेश की कठिनाई को कम करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। उनका आग्रह था कि विद्यार्थी एवं व्यवसायी इसे पढ़ पाएँ और इसके अलावा मार्शल ने (विशेष रूप से जेवान्स [Jevons] के विपरीत) इस सिद्धान्त को एक प्रबल या फिर क्रान्तिकारी नवाचार के रूप में भी नहीं, बल्कि शास्त्रीय परम्परा की निरन्तरता के रूप में प्रस्तुत किया, यद्यपि सूक्ष्म परीक्षण द्वारा इसमें शास्त्रीय दृष्टिकोण से मूलभूत विच्छेद दिखाई देता है। परन्तु माँग-और-आपूर्ति वक्र पहली नजर में जितने सम्भव और सुस्पष्ट दिखाई पड़ते हैं बारीकी से निरीक्षण करने पर वे बेहद मुश्किल साबित होते हैं।

आंशिक विश्लेषण (Partial Analysis) – मार्शल के अनुसार, अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र की जटिलता के कारण नियंत्रित प्रयोग की सम्भावनाएँ इसमें नहीं हैं (प्रायोगिक अर्थशास्त्र के हिमायतियों ने इस बाधा को पार करने की कोशिश की है; देखें अध्याय 12)। मार्शल ने विश्लेषण कार्य को “तर्क की कुछ लम्बी शृंखलाओं को बनाने के रूप में नहीं बल्कि कई छोटी-छोटी सही शृंखलाओं को बनाने के रूप में देखा।” यह पद्धतिगत स्थिति सामान्य सन्तुलन सिद्धान्त की “लम्बी शृंखला” के विरुद्ध तैयार की गई जिसने मार्शल को अलग-

अलग बाजारों का अध्ययन इस अवधारणा पर करने के लिए अग्रसर किया कि अन्य सभी वस्तुओं और उत्पादक सेवाओं की कीमतें दी गई हैं तथा स्थिर हैं। यह "आंशिक सन्तुलनों की विधि" है। मार्शल ने विशुद्ध प्रतियोगिता (perfect competition) की परिस्थितियों पर ध्यान केन्द्रित किया जो कि अधिकांश सीमान्तवादी अर्थशास्त्रियों का कार्यक्षेत्र रहा है। उन्होंने सख्त शर्तों को परिभाषित किया जिनके अन्तर्गत आंशिक सन्तुलन विधियों को लागू किया जा सकता है : (1) माँग-और-आपूर्ति वक्र की एक दूसरे से स्वतंत्र होने की आवश्यकता, (2) कीमत या मात्रा में केवल छोटे परिवर्तनों की अनुमति है, और (3) कुछ परिवर्तनों के कारण होने वाले समायोजनों को अवलोकन के अन्तर्गत बाजार तक ही सीमित होना चाहिए और अन्य बाजारों की स्थिति को स्पष्ट रूप से प्रभावित नहीं करना चाहिए। परन्तु, इन शर्तों की व्यापक अवहेलना के परिणामस्वरूप आंशिक सन्तुलन पद्धति की व्याख्यात्मक शक्ति का अति आकलन (overestimation) एवं उसपर आधारित नीतियों पर अनुचित निर्भरता की स्थिति उत्पन्न हुई।

अवधि विश्लेषण (Period Analysis) – मार्शल एक "अवधि विश्लेषण" के माध्यम से कीमतों और उत्पादन की मात्राओं के निर्धारण की समस्या का समाधान करते हैं। एक अत्यन्त अल्पकालिक दृष्टिकोण में (मछली बाजार के एक दिन की याद आ गई), आपूर्ति स्थिर होती है और माँग बाजार में कीमत को निर्धारित करती है। अल्पकालिक दृष्टिकोण में (या कहें, मछली बाजार में एक सप्ताह) मशीनों की क्षमता का उपयोग और काम की तीव्रता (या एक नाव और उसके चालक दल ने मछली पकड़ने में जो समय बिताया) को बदलकर कुछ सीमाओं के भीतर आपूर्ति में बदलाव किया जा सकता है; तब ऐसी स्थिति में, माँग एवं आपूर्ति दोनों का ही प्रभाव अल्पकालिक सामान्य कीमत पर पड़ता है। दीर्घकालिक दृष्टिकोण में, उत्पादन उपकरण और रोजगार विविध (चर) हो सकते हैं (मत्स्य पालन के मामले में : नावों और कर्मचारियों की संख्या को घटाया या बढ़ाया जा सकता है), और बाजार में फ़र्मों की संख्या भी बदल सकती है (यानी, नई फ़र्में मछली पकड़ने के उद्योग में प्रवेश कर सकती हैं या इस उद्योग को छोड़ भी सकती हैं)। इसलिए दीर्घकालीन सामान्य कीमत के निर्धारण में, आपूर्ति माँग की अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली होती है। अतिदीर्घकालीन या निरन्तरता के दृष्टिकोण में, प्रौद्योगिकी और संगठनात्मक परिवर्तनों को ध्यान में रखना होगा, अर्थात, नई जानकारियाँ जो कि पूँजीगत सामग्री और श्रम में निहित हैं, वे आपूर्ति एवं माँग में साथ-साथ परिवर्तन द्वारा कीमत निर्धारण करेंगी (जैसे कि मछली पकड़ने के लिए नए ध्वनि सूचक यंत्र [sonar fish-finding devices] के प्रयोग की शुरुआत)।

मार्शल की दीर्घकालीन सामान्य कीमत की अवधारणा एवं उत्पादन कीमत की शास्त्रीय अवधारणा में काफी साम्यता है, और शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों की तरह उन्होंने भी प्रतिस्पर्धी परिस्थितियों में पूँजी पर प्रतिफल की एक समान दर की परिकल्पना की है। मार्शल ने

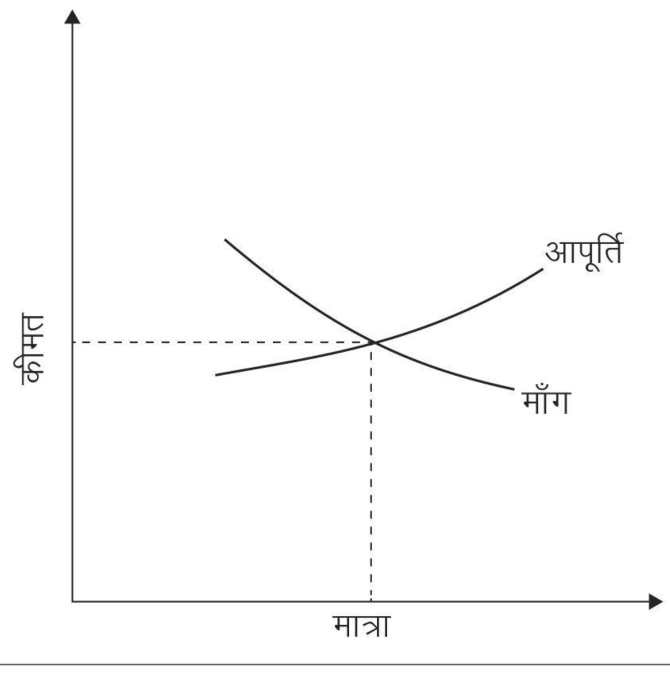
स्वीकार किया कि शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों ने उत्पादन सम्बन्धी सिद्धान्तों के विकास में काफी अच्छा योगदान किया है, परन्तु माँग पक्ष की कथित उपेक्षा के लिए वे उन्हें दोषी ठहराते हैं। कीमत निर्धारित करने के लिए, जैसा कि उन्होंने इसे एक प्रसिद्ध रूपक में कहा है, "एक कैंची के दो ब्लेड" – माँग और आपूर्ति – आमतौर पर आवश्यक होते हैं।

मार्शल के विचार को बेहतर ढंग से समझने के लिए आइए हम संक्षेप में एक ही फ़र्म को अल्पकालिक अवधि के दृष्टिकोण में देखें। विशुद्ध प्रतियोगिता की शर्तों के अन्तर्गत इस फ़र्म के पास बाजार में कोई शक्ति नहीं है अतः इसे बाजार द्वारा निर्धारित कीमत स्वीकार करना आवश्यक है। फ़र्म को उत्पादन और उत्पादन की प्रति इकाई लागत से सम्बन्धित एक सीमान्त लागत फलन का सामना करना पड़ता है। लागत आमतौर पर उत्पादन वृद्धि के साथ बढ़ती जाती है और प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन उससे बिलकुल पहले उत्पादित इकाई की तुलना में अधिक महँगा होता जाता है। इसकी वजह अल्पकाल में फ़र्म के लिए उत्पादन के कारकों, मसलन, एक दिया गया उत्पादन संयंत्र और उपकरण, कर्मचारियों की संख्या, आदि के नियत एवं अपरिवर्तित रहने की बाधा है। अल्पकाल में उत्पादन के कुछ ही कारक जैसे कि उत्पादन के लिए उपयोग में लाया जाने वाला कच्चा माल एवं ऊर्जा की मात्रा आदि परिवर्तनशील चर हैं। बढ़ते उत्पादन स्तर के साथ स्थिर कारकों की सापेक्ष दुर्लभता, उत्पाद की प्रति इकाई लागत में बढ़ोतरी के रूप में परिलक्षित होगी – अर्थात बढ़ती हुई सीमान्त लागत के रूप में। (जैसे-जैसे श्रमिक थकते जाएँगे बिक्री न करने योग्य या बर्बाद उत्पादों में वृद्धि होगी।) फ़र्म अब अपने लाभ को उस उत्पाद मात्रा पर अधिकतम करेगी जहाँ इसकी सीमान्त लागत उत्पाद की कीमत के बराबर होगी। अगर कीमत सीमान्त लागत से अधिक हो तो अन्य सभी कारकों के अपरिवर्तनीय रहने पर फ़र्म अधिक मात्रा में आपूर्ति करेगी। यह फ़र्म के लिए एक "आपूर्ति फलन" की अवधारणा को प्रस्तुत करता है जो फ़र्म के सीमान्त लागत फलन के बराबर होता है (न्यूनतम औसत परिवर्तनीय लागत से ऊपर)। चूँकि अल्पावधि में फ़र्मों की संख्या स्थिर मानी जाती है, इसलिए मार्शल फ़र्मों के विशिष्ट आपूर्ति फलन का योग कर सम्पूर्ण उद्योग के द्वारा उत्पादित वस्तु का आपूर्ति वक्र प्राप्त करते हैं।

सम्बन्धित माँग वक्र के निर्माण सम्बन्धी तर्क निम्नलिखित हैं। व्यक्तियों को उनकी आवश्यकताओं और इच्छाओं के रूप में देखा जाता है जिनकी सन्तुष्टि वो वस्तुओं के विभिन्न संयोजनों के उपभोग द्वारा करते हैं। अर्थात, एक वस्तु को किसी अन्य वस्तु से प्रतिस्थापित करने की सम्भावना है और फिर भी समान सन्तुष्टि या उपयोगिता प्राप्त की जाती है। दूसरे शब्दों में, एक वस्तु को दूसरी वस्तु से प्रतिस्थापित करने पर भी वही सन्तुष्टि या उपयोगिता प्राप्त करने की सम्भावना होती है। उदाहरण के लिए, आलू को चावल से प्रतिस्थापित किया जा सकता है (इसका विपरीत भी सम्भव है)। सभी वस्तुओं की दी गई कीमतों पर, किसी एक वस्तु के लिए, जिसकी कीमत में वृद्धि (या गिरावट) आमतौर

पर (यद्यपि जरूरी नहीं है) व्यक्ति को इसका कम (या अधिक) उपभोग करने के लिए प्रेरित करेगी। यह उपभोक्ता के माँग फलन की अवधारणा की ओर अग्रसर करता है, जो अन्य सभी वस्तुओं की कीमत को स्थिर मानकर (और उपभोक्ता की आय को स्थिर मानकर) विचाराधीन वस्तु की माँग की मात्रा और उसकी कीमत के वैकल्पिक स्तरों से सम्बन्धित है। सभी उपभोक्ताओं का वस्तु विशेष के लिए माँग फलन का योग उस वस्तु विशेष के लिए सामूहिक माँग फलन देता है। आमतौर पर (आवश्यक रूप से नहीं) यह दिखाने के लिए माना जाता है कि वस्तु की कीमत जितनी कम होगी उतनी ही अधिक मात्रा में माँग की जाएगी।

मार्शल तब सामूहिक आपूर्ति वक्र के साथ सामूहिक माँग वक्र का सामना करवाकर उनके प्रतिच्छेदन बिन्दु पर सन्तुलन कीमत एवं सन्तुलन मात्रा को निरूपित करते हैं। जैसा कि अब पारम्परिक है, चित्र 5.1 में मात्रा को x-अक्ष के साथ और कीमत को y-अक्ष के साथ दर्शाया गया है। यहाँ मैंने मार्शल की दूसरी शर्त को लागू करते हुए केवल कीमत और मात्रा में छोटे बदलावों के लिए आपूर्ति और माँग वक्र तैयार किए हैं। पाठ्यपुस्तकों में अकसर ही कीमतों (और मात्राओं) के 1 डॉलर से लेकर 1000 डॉलर तक के विशाल अन्तराल लिए खींचे गए वक्रों को देखा जाता है। लेकिन कल्पना कीजिए कि भारत में चावल की कीमत में वर्तमान कीमत से 50 गुना उछाल आता है तो इस स्थिति में सन्तुलन विश्लेषण को भूल जाना ही बेहतर होगा और राजनीतिक अशान्ति और क्रान्ति के सिद्धान्त की तरफ मुड़ना आवश्यक होगा।



चित्र 5.1 मार्शल का क्रॉस

दीर्घकालिक विश्लेषण में इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि कुछ अवलम्बी फ़र्में मौजूदा बाजार को छोड़ सकती हैं और नई फ़र्में प्रवेश कर सकती हैं और इस प्रकार फ़र्मों की कुल संख्या तथा उद्योग की उत्पादन क्षमता बदल सकती है। यदि कीमत न्यूनतम औसत लागत से अधिक है, तो जो फ़र्म बाजार में हैं उन्हें अतिरिक्त मुनाफा मिलता है। यह अन्य फ़र्मों को आकर्षित करता है। इसके विपरीत स्थिति में, बाजार में फ़र्म घाटे में जाती हैं और फिर बाजार से विदा हो जाती हैं। एकमात्र कीमत जो फ़र्म के लिए एक सन्तुलन कीमत हो सकती है वह स्पष्ट रूप से दीर्घकालिक न्यूनतम औसत लागत के बराबर होगी।

किसी उद्योग का दीर्घकालिक सन्तुलन कैसा दिखता है? यह इस बात पर निर्भर करता है कि किसी उद्योग की उत्पादन मात्रा में परिवर्तन के साथ-साथ उत्पादन लागत किस प्रकार परिवर्तित होती हैं। आदर्श रूप में, दीर्घकाल में उत्पादन के सभी कारक परिवर्तनशील होते हैं अर्थात कोई भी कारक स्थाई नहीं होता। उदाहरण के लिए, अल्पावधि में फ़र्म अपने संयंत्र और उपकरणों के आकार और कुशल श्रमिकों की संख्या से सीमित हो सकती है, परन्तु दीर्घावधि में यह शुद्ध निवेश (अथवा विनिवेश) द्वारा प्रथम कारक (संयंत्र या उपकरणों का आकार) को और अधिक श्रमिकों (या कम श्रमिकों) को काम पर लगाकर, दूसरे कारक को बढ़ा (या घटा) सकती है। अतएव दीर्घकाल में फ़र्म अपनी उत्पादन क्षमता को उत्पादन की उस मात्रा के लिए समायोजित कर सकती है जितनी मात्रा की आपूर्ति वह बाजार में करना चाहती है। अब सवाल यह है कि क्या फ़र्म स्थिर, घटते या बढ़ते “पैमाने के प्रतिफल” के अन्तर्गत संचालित होती है। इससे अर्थशास्त्रियों का अर्थ है कि क्या उत्पादन में वृद्धि विभिन्न आगतों की मात्रा में वृद्धि के किसी आनुपातिक, आनुपातिक से अधिक, या आनुपातिक से कम मात्रा में होती है। दी गई आगत कीमतों के साथ यह इकाई लागत में परिवर्तित हो जाती है जो कि स्थिर, बढ़ रही, या घट रही होती हैं।

उत्पादन की किसी भी मात्रा पर जब प्रति इकाई लागत स्थिर होती हैं, तब दीर्घकालीन आपूर्ति वक्र मात्रा अक्ष (x-अक्ष) के समानान्तर एक सीधी रेखा होती है। माँग तब केवल उद्योग द्वारा उत्पादित मात्रा को निर्धारित करती है, न की कीमत, जो कि लागत द्वारा निर्धारित होती है। सीमान्त और औसत लागतों के लगातार बढ़ते रहने की स्थिति में, यह अवधारणा, कि उत्पादन के सभी कारक परिवर्तनशील हैं, लागू नहीं होती है। उदाहरण के लिए, उद्योग एक विशेष प्रकार की भूमि का उपयोग कर सकता है जो कम आपूर्ति में है, और जब उद्योग का उत्पादन बढ़ता है तो भूमि की बढ़ती सापेक्ष कमी भूमि के मालिकों को दिए जाने वाले उच्च लगान में परिलक्षित होगी (जो अन्य सभी वस्तुओं और आगतों की स्थिर कीमतों की अवधारणा का खण्डन करता है)। बढ़ती हुई उत्पादन मात्रा पर, गिरती हुई सीमान्त और औसत लागतों की स्थिति में मार्शल फ़र्म के आन्तरिक एवं बाहरी पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं में विभेद करते हैं। पहले मामले में, आन्तरिक पैमाने की अर्थव्यवस्था सिर्फ

एक फ़र्म पर लागू होती हैं न कि सम्पूर्ण उद्योग पर, जबकि दूसरे मामले में बाहरी पैमाने की अर्थव्यवस्था सम्पूर्ण उद्योग के सभी फ़र्मों पर एक साथ लागू होती हैं। अर्थात, उद्योग बड़े उत्पादन स्तरों से समग्र रूप से लाभान्वित होता है। ऐसे मामलों में, जहाँ पैमाने की अर्थव्यवस्था फ़र्म के अन्तर्गत हैं, एकाधिकार का निर्माण होता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि एक फ़र्म जो अधिक उत्पादन करती है उसे अपने प्रतिस्पर्धियों पर लागत सम्बन्धी सुविधा होती है और वह उन्हें बाजार से बाहर निकालने में सक्षम होती है। फ़र्म का उत्पादन जितना अधिक होगा, उसकी इकाई लागत उतनी ही कम होगी और अपने प्रतिस्पर्धियों की कीमतों को कम करने की उसकी दबाव की क्षमता उतनी ही अधिक होगी।

यह मामला प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था में मार्शल के सन्तुलन के विश्लेषण का उपयोग करने से बचेगा। केवल पैमाने की उन अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति, जो उद्योग के लिए आन्तरिक हैं लेकिन एकल फ़र्म के लिए बाहरी हैं, को उनके सिद्धान्त द्वारा अधिकृत किया जा सकेगा, लेकिन मार्शल को इसके लिए विश्वासप्रद अनुभवजन्य उदाहरणों की पहचान करने में कठिनाई होती है। चूँकि वे इस मामले को बहुत महत्त्व देते हैं इसलिए वे सकारात्मक "बाहरी प्रभावों" की अवधारणा को प्रस्तुत करके इसे अपने सिद्धान्त के दायरे में रखने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार के प्रभाव एक उद्योग के विकास के साथ-साथ होते हैं और उस उद्योग में सभी फ़र्मों की औसत लागत को कम करते हैं, भले ही प्रत्येक व्यक्तिगत फ़र्म अपने दम पर बढ़ती लागतों को स्वयं प्रदर्शित करती है; बाहरी प्रभाव उद्योग को व्यक्तिगत फ़र्म द्वारा नियंत्रण से बचाते हैं। मार्शल एक उद्योग के आन्तरिक बढ़ते हुए प्रतिफलों की अपनी अवधारणा को बेहतर सूचना स्तर के रूप में, किसी प्रतिबन्धित भौगोलिक स्थान में एक उद्योग के विस्तार ("औद्योगिक जिले") के साथ, प्रदर्शित करते हैं। किसी विशेष क्षेत्र में कारों या मशीन उपकरणों जैसे समान उत्पादों का उत्पादन करने वाली फ़र्मों के समूह के बारे में सोचें। आधुनिक समय में, सिलिकॉन वैली में सूचना प्रौद्योगिकी और उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग उदाहरणस्वरूप स्मरण हो आता है।

मात्रा पर निर्भर करने वाली लागतों ("परिवर्तनीय" लागतों) की स्थिति में, किसी उद्योग का दीर्घकालिक आपूर्ति वक्र सैद्धान्तिक रूप से बढ़ती या गिरती ढलान प्रदर्शित करता है जो इस बात पर निर्भर करेगा कि उस उद्योग क्षेत्र में घटते या बढ़ते प्रतिफलों का प्रचलन है।

स्राफ़ा द्वारा की गई आलोचना (Piero Sraffa's Critique) – पिएरो स्राफ़ा ने आंशिक विश्लेषण की कट्टर आलोचना 1925 एवं 1926 में प्रकाशित अपने दो निबन्धों में की है। उनकी मुख्य आपत्तियाँ इस प्रकार हैं : इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि परिवर्तनशील लागतों के साथ किसी उद्योग की उत्पादन मात्रा में कोई परिवर्तन दूसरे उद्योगों में अवस्थित फ़र्मों की लागतों में साथ-साथ परिवर्तन लाता है। यह मार्शल की तीसरी

शर्त के विपरीत है। उदाहरण के लिए, यह एक ऐसा मामला है जब दोनों उद्योग एक ही तरह की भूमि का उपयोग अलग-अलग वस्तुओं के उत्पादन के लिए करते हैं मसलन, सेब और नाशपाती। सेब के उत्पादन में वृद्धि से भूमि का लगान बढ़ जाता है। लेकिन यह सेब और नाशपाती दोनों के लागत फलन को ऊपर की ओर विस्थापित करता है। इसके अतिरिक्त, यदि सेब के उत्पादन में वृद्धि से उन फ़र्मों की लागत की स्थिति में बदलाव आता है जो सेब के उत्पादन के लिए आगत का उत्पादन करती हैं (उदाहरण के लिए, उर्वरक या कटाई मशीनें) तो इसका सेब के उत्पादन में लागत फलन पर असर पड़ता है।

उपरोक्त दोनों स्थितियाँ विभिन्न उद्योगों में आपूर्ति फलन की स्वतंत्रता के साथ असंगत हैं, तथा आंशिक विश्लेषण की प्रयोजनीयता को सन्देहास्पद बनाती हैं। यदि परिवर्तनशील लागत के साथ किसी उद्योग की उत्पादन मात्रा में परिवर्तन किसी अन्य उद्योग की फ़र्म की लागत में परिवर्तन का अवसर प्रदान नहीं करता है तब परिवर्तनशील लागत उस उद्योग के लिए आन्तरिक होती हैं। उदाहरण के लिए, यह एक ऐसी स्थिति है जब पूरी और प्रत्येक विशेष प्रकार की भूमि का उपयोग केवल एक ही प्रकार की वस्तु के उत्पादन के लिए किया जाता है। (उदाहरण के लिए, सेब के उत्पादन में केवल गुणवत्ता अ वाली भूमि का उपयोग किया जाता है, जबकि नाशपाती के उत्पादन में केवल गुणवत्ता ब वाली भूमि का उपयोग किया जाता है।) लेकिन चूँकि यह मामला अनुभवजन्य रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है, स्राफ़ा ने निष्कर्ष निकाला कि जबकि स्थिर प्रतिफल की स्थिति में माँग कीमत को प्रभावित नहीं करती है और इस प्रकार दी गई सभी आगत कीमतों पर इकाई लागत स्थिर होती हैं, परिवर्तनीय लागत की स्थिति या तो प्रतिस्पर्धा की अवधारणा के साथ असंगत है (यदि बढ़ते हुए प्रतिफल फ़र्म के लिए आन्तरिक हैं), या यह आंशिक विश्लेषण के दायरे से बाहर है और एक सामान्य विश्लेषण की माँग करता है, या फिर इसके समर्थन में शक्तिशाली अनुभवजन्य साक्ष्य प्रदान करना कठिन है। विश्लेषण का व्याख्यात्मक मूल्य तदनुसार अत्यन्त छोटा है।

उद्योगों के बीच परस्पर निर्भरता के कारण सामान्यतया एक समय में केवल एक आगत या उत्पाद की कीमत में परिवर्तन सम्भव नहीं है और इस परिवर्तन के प्रभाव का विश्लेषण सिर्फ एक बाजार में करना ऐसा है जैसे कि निर्वात में किया जा रहा हो। आर्थिक प्रणाली के भीतर हमेशा ऐसे प्रभाव होते हैं जो न केवल मात्रात्मक बल्कि गुणात्मक रूप से परिणाम को भी प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए आंशिक सन्तुलन विश्लेषण को बहुत सावधानी के साथ नियोजित किया जाना चाहिए, और इसके परिणामों को विश्लेषण के एक अधिक सामान्य ढाँचे के भीतर सावधानीपूर्वक जाँच के बाद ही अपनाया जाना चाहिए। स्राफ़ा की आलोचना उस समय व्यापक रूप से चर्चा में थी। जोसेफ़ ए शुम्पीटर (Joseph A. Schumpeter) ने स्राफ़ा के “शानदार मूल प्रदर्शन” की बात की थी। ऑस्कर मोर्गनस्टर्न (Oskar Morgenstern, 1902-1977), जो मूल रूप से सीमान्तवाद के ऑस्ट्रियाई संस्करण के

हिमायती थे, ने स्राफ़ा के द्वारा की गई आलोचना से निष्कर्ष निकाला (1) कि “आंशिक सन्तुलन की विधि को पूरी तरह नकार दिया गया है” और (2) माँग और आपूर्ति की कथित समरूपता संदिग्ध है। जैसा कि स्राफ़ा ने तर्क दिया था कि यदि उत्पाद में छोटे बदलावों के सम्बन्ध में दीर्घकालिक विश्लेषण के लिए स्थिर प्रतिफलों से शुरू करना सबसे अच्छा है, इस प्रकार माँग पक्ष के महत्त्व और मार्शल के दृष्टिकोण पर प्रश्नचिह्न लगाया जाता है।

स्राफ़ा की आलोचना को लेकर कुछ सम्भावित प्रतिक्रियाएँ हैं। पहला, कोई आंशिक सन्तुलन की विधि का परित्याग कर देता है लेकिन विशुद्ध प्रतिस्पर्धा की स्थितियों में माँग-और-आपूर्ति के दृष्टिकोण पर कायम रहता है तो इस स्थिति में एक सामान्य सन्तुलन ढाँचे को अपनाया जाना है, जिसमें अर्थव्यवस्था के विभिन्न एजेंटों (प्रतिनिधियों) और उद्योगों की अन्योन्याश्रितता को ध्यान में रखा जाता है। मैं अध्याय 6 और 11 में ऐसे योगदानों को सम्बोधित करता हूँ। दूसरा, कोई आंशिक सन्तुलन विधि और माँग-और-आपूर्ति दृष्टिकोण दोनों को ही त्याग देता है और शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों के अधिशेष दृष्टिकोण पर लौट आता है। यह एक सामान्य विश्लेषणात्मक रूपरेखा है जो उद्योगों के बीच की स्वतंत्रता को ध्यान में रखती है। मैं अध्याय 12 में इससे सम्बन्धित साहित्य के योगदानों का वर्णन करता हूँ। तीसरा, कोई विशुद्ध प्रतियोगिता की अवधारणा को त्याग देता है लेकिन आंशिक सन्तुलन ढाँचे को बनाए रखता है। यह अपूर्ण या एकाधिकार प्रतियोगिता के सिद्धान्तों की ओर ले जाता है, जिसमें बाजार के विभिन्न रूपों की तरफ ध्यान दिया जाता है। इन सिद्धान्तों के बारे में, मैं अध्याय 7 में संक्षेप में बात करता हूँ। लेकिन ऐसा करने से पहले मैं 19वीं सदी के अन्त और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में अर्थशास्त्र की कुछ महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियों और बहसों को संक्षेप में प्रस्तुत करता हूँ।

●●